ओ३म्



# स्वामी विवेकानंद

# ना वैदिकी - ना वेदान्ती


तृतीय संस्करण : 3000

लागत मूल्य : 100 प्रतिशत

प्रचारार्थ मूल्य : 50 प्रतिशत } प्रेषण व्यय पृथक

एक प्रति : 1-00

स्वामी दयानंद निर्वाण दिवस 30 अक्तूबर 1997



लेखक : श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य, वानप्रस्थ

कुंवरजीवाडी, मु.पो. खामगांव 444303 (महाराष्ट्र)

ओ३म्

## "स्वामी विवेकानंद ना वैदिकी ना वेदान्ती

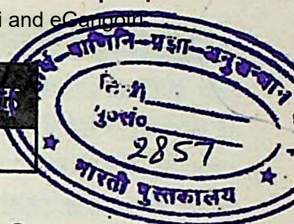
अभी अभी की घटना है की, दक्षिण मे मीनाक्षीपुरम के भोले भाले हिंदु मछवारोको धन देकर इस्लाम धर्म कबूल कराया गया. गावके ८५ प्रतिशत लोग मुसलमान हुये गावंका नाम मिनाक्षीपुरम से रहमंतपूर रखा गया। यह खबर तामिळनाडू आर्य प्रतिनिधी सभा प्रधान स्वामी नारायणजी को लगते ही उन्होने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा दिल्ली को खटखटाया। वहांसे अनेक प्रचारक, शास्त्रार्थ कर्ता, उपदेशक, भजनीक आदि भेजे गये। साहित्य भी भेजा गया। वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार की धूम मच गयी। 85 प्रतिशत हिंदु लोग जो बिछड गये थे उन्हे फिरसे पवित्र सनातन वैदिक धर्म में प्रत्यावर्तन कर दीक्षित किया गया। शालाये खोली गयी। शिक्षा का प्रबंध किया गया। एक डझन जन्मजात मौलवी-वैदिक धर्म के प्रभाव से शुद्ध हुये अब वे इस्लाम छोडकर वैदिक धर्म का स्वयं प्रचार कर रहे है।

ध्यान रहे कन्याकुमारी के निकट स्वामी विवेकानंद मठ है। परंतु उन्होने इस घटना की सुधबुध नही ली। उन्हे हिंदू मिटजानेसे क्या फरक पडता है ?

मेरे इस प्रस्तुतिकरण का उद्देश किसी की किसीप्रकार भावना या विचोरोंको ठेंस पहुचाना नही है। एक यथार्थ चित्र, वास्तववादी चित्रण खुलकर सामने आवे, सत्यान्वेषण हो, यही मेरा हेतुं है।

**श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य**, वानप्रस्थ **खामगांव** - 444303

ओ३म्




# स्वामी विवेकानंद

## ★ एक परामर्श ★

**श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा :**

पिताश्री विश्वनाथ दत्त तथा माताश्री भुवनेश्वरी देवी को दि. १२ जनवरी १८६३ पौष सप्तमी को कलकत्ता के सिमुलिया विभाग मे एक पुत्ररत्न प्राप्त हुवा जिसका नाम नरेन्द्रनाथ रखा गया। कलकत्ता विश्व विद्यालय मे सन १८८४ मे नरेन्द्रनाथ ने बी ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसीवर्ष उनके पिताका देहान्त हुवा। नरेन्द्रनाथ १८८१ मे रामकृष्ण परमहंस के पास गये और रामकृष्णजी के महा निर्वाण पर्यंत वे उन्हीके पास रहे। रामकृष्ण परमहंस का निर्वाण १५ अगस्त १८८६ मे श्रावण पौर्णिमासीको रातको १ बजकर ६ मिनिट पर कण्ठ कॅन्सरसे हुवा। उन्होने मा काली इस शब्द का त्रिवार उच्चारकर अपना देह त्याग दिया। सन १८८७ मे नरेन्द्रनाथ ने अन्य मित्रोके साथ सन्यास दीक्षा ग्रहण की। कहते है उन्होने अपना नाम विविदिषानंद/सच्चिदानंद रख लिया था। पश्चात उन्होने नाम बदलकर विवेकानंद धारण किया। वराहनगर मे तप करने के उपरान्त सन १८९१ मे वे परिव्राजक बने। रामकृष्ण परमहंस जो कण्ठ कॅन्सरसे पीडित थे और ११-१२-८५ से काशीपुरमे रहते थे वे अपने अंतिम समय मे 'शिवभाव से जीवसेवा' यह महामंत्र नरेन्द्रनाथ को दे गये थे।

रोमन कॅथालिक धर्म प्रमुख कार्डीनल गिबन्सकी अध्यक्षतामे दि. ११ सितम्बर १८९३ को शिकॅगो मे विश्वधर्म परिषद का आयोजन हुवा। इसमे हिंदु धर्म के प्रतिनिधी स्वरूप विवेकानंद ने हाथ बटाया। १७ दिवसीय धर्म परिषदमें स्वामी विवेकानंदने १२ भाषण दिये - उनका कहना था कि " ख्रिश्चन मनुष्य को हिंदु या बौध्द बननेका कोई कारण नही इसीप्रकार हिंदु और बौध्दो के ख्रिश्चन बननेका कोई प्रयोजन नही प्रत्येक धर्म ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखकर अन्य धर्मोकी अच्छी बाते ग्रहण करनी चाहिये।" उनके भाषण के प्रभावसे उनको सायक्लोनिक हिंदु मंक, लाईटनिंग ओरेटर कहा जाने लगा। फरवरी १८९५ पर्यंत उन्होने अमेरीकाके अन्यं प्रांतो मे ज्ञानयोग, राजयोग आदि विषयोंपर भाषण देकर भारत की प्रतिमा उज्वल की। २२ अक्तुबर को इंग्लंड मे आत्मज्ञान विषय पर उन्होने भाषण दिया। ६ दिसंबर को लौटकर वे अमेरिका पहुंचे तब कर्मयोग, भक्तियोग पर उनके वक्तव्य हुये। सन १८९६ मे उन्होने न्युयार्कमे वेदान्त समिती की स्थापना की। मिस नोबल जिसका नाम आगे भगिनी निवेदिता रखा गया, ऐसे जीवन समर्पण करनेवाले कुछ व्यक्ति उन्हे मिल गये। जर्मनीमे पॉल डायसनसे संपर्क हुवा। वेदान्त

प्रचार के दौरान विवेकानंद कहते थे, "यदि तुम्हे जीवन यापन करना हो तो प्रभु येशु को शरण जावें। धर्म ही एकमेव भारत का आधार है, संसार को आध्यात्मिक प्रकाशका दान भारतने दिया है।" वेदान्त दर्शन तथा सर्वधर्म समन्वयपर उनका बडा जोर था। २० फरवरी १८९७ मे कलकत्ता आकर बैलूरमठ भागमे २० विघा जमीन खरीदकर उन्होने रामकृष्ण मिशन संस्था का निर्माण किया। १२ नवंबर को उन्होने कलकत्ता मे कन्या विद्यालय प्रारंभ किया। उन्होने अमरनाथ का दर्शन कर इच्छामरण का वर प्राप्त किया। ९ दिसंबर को बेलुरमठमे स्वहस्ते रामकृष्ण की प्रतिमा की। १८९९ मे 'उदबोधन' नामक बंगाली भाषी मासिक का प्रारंभ किया। जून १८९९ मे फिरसे वे युरप अमेरिका गये और १९०० मे लौट आये। अक्तूबर १९०१ मे बेलूरमठमे दुर्गाकी पूजा की। हिंदुओंकी आत्मियता एवं सहानुभूति नही होनेसे मद्रास प्रांतके हजारो अस्पृश्य हिंदु अपना धर्म त्याग कर ख्रिश्चन बने। जीवन के ३९ मे ४ जुलाई १९०२ शुक्रवार रात ९-१० को उनकी जीवन लीला पूर्ण हुई। उनका उपदेश था कि मूर्ति माने देव कहने मे हकत नही किन्तु देव माने मूर्ति यह गलत विचार छोडना चाहिये। उपर लिखित जीवन चरित्र के लेखक स्वामी अपूर्वानंदजी, रामकृष्णमठ, नागपुर यह है। हमने संक्षेपमें यह उसीसे लेकर प्रस्तुत किया है।

स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानंद सरस्वती दोनो महापुरूष थे। जीवन कार्यकाल की दृष्टिसे स्वामी विवेकानंद सन १८६३ से १९०२-३९ वर्ष तथा स्वामी दयानंद सरस्वतीजी महाराज ने सन १८२४ से १८८३,५९ वर्ष का जीवन यापन किया, इसका अर्थ यह है कि दोनो १९ वी शती मे हुये है और दोनो कुछ समय समकालीन थे। दोनो आजीवन ब्रह्मचारी थे और दोनोने सन्यास दीक्षा ग्रहण कर धर्म प्रचार प्रसार कार्य किया है। दोनोमे यह साम्य है कि दोनो वेदोको अपौरूषेय मानते थे, दोनोका वेदोकी नित्यतामे विश्वास था। और भी साम्य इस प्रकार है कि दोनो वेदोंको स्वतः प्रमाण मानते थे। दोनोने संस्थाओं का निर्माण किया, साहित्य सृजनभी किया। दोनोने कन्याओंकी शिक्षा की ओर ध्यान दिया और विद्यालय खुलवाये।परंतु दोनो महानुभाव कभी परस्पर मिले नही, ना कोई संपर्क उनमेंहुवा।

उपरनिर्दिष्ट साम्य होते हुये भी विवेकानंद और स्वामी दयानंद सरस्वती इन दोनोमे मौलिक, पायाभूत महद अन्तर है। पूर्वग्रह दूषित न होते हुये और हमारे आर्य समाजी विचार होनेसे वाचक कुछ शंका मनमे उपस्थित कर सकते है। परन्तु मै निम्नलिखित विवेचनका पूर्णतः निर्णय करनेका संपूर्ण अधिकार समस्त सुबुध्द, ज्ञानी, विवेकशील, पाठकोपर सौंप देता हूं, वे स्वयं जान लेवे कि कौन कैसा है और जानने के साथ, यदि

सत्यता चाहते है तो, माननाभी प्रारंभ कर देवें, अैसी विनम्र प्रार्थना है। कुछ पाठक प्रश्न कर सकते है कि ऐसा क्यों किया जा रहा है ? उत्तर मे निवेदन है कि स्वामी विवेकानंदका कार्य कैसे डावाडोल है और गंगा गये गंगादास, जमना गये जमनादास की मान्यता से वे कैसा ग्रसित थे, यह शुध्दरूपसे खुलकर सामने आवे। वेद एवं वैदिक धर्म संबंधी उनका ज्ञान किसप्रकार औछा था, भ्रान्त था, विपरीत था, बस सुबुध्द पाठक यदि यही जान लेवे, तो मेरे अल्प प्रयासका कुछ फल मुझे प्राप्त होगा।

**नामाभिधान** : १) भारतमे सन्यासीयोंके दस प्रकार है, जैसे, गिरी, पुरी, भारती वन, अरण्य, तीर्थ, दण्डी, सरस्वती, आनन्द और सागर। स्वामी दयानंदजी सरस्वती कहलवाये। स्वामी विवेकानन्दजी के नामाभिधान के आगे संन्यासी का प्रकार उपयोगमे नही है। यदि हो, तो उसका स्पष्टरूपसे उपयोग उन्होने क्यों नही किया? यदि करते तो सन्यासीयों के प्रकार की और भारतीय व्यवस्था की गरीमा बढती थी या नही ? सन्यासी का नाम उनके गुरू के साथ प्रसिध्द होता है। स्वामी दयानंद सरस्वतीजी की पुस्तकोमे प्रायः यह लिखा मिलता है कि श्रीमत दण्डी स्वामी विरजानंदस्य शिष्येण परन्तु स्वामी विवेकानंदजी के साहित्यमें इस प्रकार उल्लेख मिलता नही, इसका क्या कारण होगा ? क्या यह इसलिये नही किया गया कि स्वामी विवेकानंदजीने अपने नामोमे दो बार परिवर्तन किया। जैसाकि उपरी चरित्र से १ विविदिशानंद, २ सच्चिदानंद, 3 विवेकानंद है। गुरू के प्रदान नाम को चलाना या अपने स्वरूचिका नाम एक बार धारण करना, यह परंपरा उचित लगती है, किन्तु स्वामी विवेकानंदजीने जो एक ख्यातिप्राप्त सन्यासी है उन्होने एक बार रखा गया नाम क्यों नही चलाया यह प्रश्न उपस्थित होता है, क्या यह उन गुरू की मान्यता से हुवा होगा ? यदि नही तो क्यों नहीं ? यदि इस जानकारी के लिये मेरी अनभिज्ञता है तो मै बिनति करता हूं कि मेरे जैसे अन्यो के भी मार्गदर्शन के लिये संबंधित भक्त एवं मठाधीश अनुयायी जानकारी प्रस्तुत करेंगे। यह भी लिख देना आवश्यक है कि स्वामी विवेकानंद मॅक्समूलर को और रामकृष्ण परमहंस को अपना गुरू मानते थे। मॅक्समूलर या रामकृष्णजी किसी आर्ष ग्रंथोके अर्थोके उचित जानकार थे ऐसा कहना धाष्ट्र्यरूप धोखा होगा। किन्तु स्वामी दयानंद सरस्वती के गुरू विरजानंदजी आर्ष ग्रंथो के मर्मज्ञ थे। उसीकी शिक्षा और दीक्षा उन्होने स्वामी दयानंदजी को दी थी।

**आराध्य दैवत** : स्वामी दयानंद का आराध्य देव परमपिता परमात्मा, जिसके गुण वेद प्रणित है, या संक्षेपमे जो सच्चिदानंद स्वरूप निराकार सर्व शक्तिमान न्यायकारी दयालू निर्विकार इत्यादि गुणोसे परिपूर्ण है और जिसका ज्ञान वेद है ऐसे ईश्वर को ही वे मानते थे और उसीकी उपासना करना, करवाना चाहते थे। स्वामी दयानंदने ब्रह्मासे लेकर जैमिनी

पर्यंत (कहते है ८८००० ऋषि मुनि हुये है) ऋषि मुनि योगीयोंकी परंपरा आगे चलायी। मात्र स्वामी विवेकानंदका किसी हालत मे ऐसा कार्य न था। प्रस्थानत्रयी गीता, उपनिषद और वेदान्तदर्शन के अतिरिक्त उनका ज्ञान न था। वेद, उपवेद, वेदांग, ब्राह्मण ग्रंथ इत्यादि से वे अनभिज्ञ थे। स्वामी विवेकानंद का आराध्य दैवत मा काली था। काली कलकत्तेवाली देवी प्रसिध्द ही है। उनके गुरू रामकृष्ण परमहंस का भी वही आराध्य दैवत थी। काली माता की मूर्ति मै स्वयं कई बार देख आया हूं और यहभी देखा है कि मंदिर मे पंडे पुजारी रक्तवर्णका तिलक कराते है किन्तु मंदिर के अहाते के आगे एक वधस्थान है जहां प्रतिदिन बकरोकी (अजापुत्र) बलि चढाये जाती है। नवरात्री मे इतना बडा उत्सव होता है कि हजारो मूक निष्पाप बकरे काली देवी के नामपर वहां बलि चढाये जाते है। अहाते मे एक ३ फूट का वध स्तम्भ है उसमे दो कीले है उन कीले की रस्सीयोसे बकरे के सींग अटका देते है और एक काली भक्त बकरे के पीछले पांव खींचकर पकडता है ताकि खींचावसे बकरे की गर्दन काटने योग्य स्थिथी मे रहे। इतनेमे एक काली भक्त तीक्ष्ण हत्यार लेकर आता है, कालीकी और देखता है, बकरेकी ओर देखता है और एकही प्रहारसे बकरे की गर्दन काट देता है। सींगोकी अटकनसे गर्दन स्तम्भपर लटकी रहती है रक्त बहता है, पानीकी नाली इस रक्त के बहाव के लिये योजनाबध्द रीतीसे तयार की गयी है, बकरेका धड शरीर तडफडाता है उछलता है तो पीछले पाव पकडनेवाला भक्त उसे दबा लेता है। थोडीही देरमे बकरा शांत हो जाता है। गर्दन लटकनेसे जो खून टपकता है उसका तिलक वध करनेवाला पुजारी, जिसने बकरा बलि चढाया उसके माथेपर लगाता है। गर्दनोका ढेर लगता है। यह है मा काली का पूजन। ऐसी काली कराली माता जिसका आराध्य दैवत है और जो उसके निस्सीम भक्त है उसगुरू और शिष्य को मनुष्य कहें या न कहें, आपही विचारिये। इन्हे आप राक्षस तो अवश्य कहेंगे परन्तु स्वामी कदापि नही कहोगे। धन्य है ऐसे स्वामी के समर्थक। क्या स्वामी विवेकानंदने इस बलि प्रथाके विरूध्द कोई पग उठाया ? तनिक विचार करें कोई देवता बली नहीमांगता।

आपने कभी काली कराली, लाल जिव्हा बाहर निकली हुई, हाथोमें खडग धारण की हुई, गलेमे रूंडमुंड की माला पहनी हुई और शैव के छातीपर खडी हुई देवी का चित्र अवश्य देखा होगा। शैवोपर शाक्त संप्रदाय का प्रभाव बताने ऐसे चित्र कल्पना विलाससे बनाये गये है। इसी काली, दुर्गा और शक्तिदेवी का पूजन लोग करते है। तब तो यह एक विशिष्ट संप्रदायवादी समझे जाते है। वास्तव मे किसी स्वामी का कोई संप्रदाय विशेष नही होता या नही होना चाहिये, सन्यासीयोंके लिये तो सर्वेपि सुखिनः सन्तु, और वसुधैव कुटम्बकम् की विचारधारा रखना आवश्यक होता है। स्वामी विवेकानंद मात्र स्वांग को

शाक्त संप्रदायी अपने आराध्य देवताके माध्यम से स्पष्ट करते है। परन्तु वेदान्ती वैष्णव होते है तब स्वामी विवेकानंद की कैसी भ्रमित मान्यता है यह स्पष्ट होता है। स्वामी विवेकानंद के गुरू स्थानी मॅक्समूलर भी थे। यह वही मॅक्समूलर है जो वेदोंको गडरीयोंके गीत बताता है। वेढों के गलत भाष्य कर जनता को गुमराह करनेवाले यही मॅक्समूलर थे। परंतु जब स्वामी दयानंद के वेदभाष्य का उसने अध्ययन किया, निरूक्त निघण्टुका प्रयोग जाना, तब वे बदल गये और कहने लगे I maintain that there is nothing of importance egual to the Vedas वे और भी कहते रहे कि Rugveda is the oldest book in the library of mankind यह प्रभाव स्वामी विवेकानंद का नही था, वह स्वामी दयानंद का था। प्रश्न है कि गुरू रामकृष्ण परमहंस ने अंतिम समय मे शिवभावे जीवसेवा का उपदेश दिया था क्या स्वामी विवेकानंदने उसका पालन किया, काली माता के सामने जीवहत्या, बलिप्रथा क्या दर्शाती है। इससे तो स्वामी विवेकानंद गुरू द्रोही ही जान पडते है। परंतु स्वामी दयानंदने अपने गुरू के मन्तव्यका आजीवन पालनही नही किया तो उस कार्य के लिये अपने प्राणो की बली चढाई, धन्य हो स्वामी दयानंद, तुम धन्य हो।

**ईश्वराव तार :** स्वामी दयानंदजी ईश्वरका अवतार नही मानते है, अवतार शब्द का अर्थ है अवतरण, ईश्वरका अवतरण या अवतार कदापि नही होता कारण वह सर्वव्यापक निराकार है। ईश्वर कहींसे आता नही, कुछ समय ठहरता नही और पश्चात यहांसे चले जाता नही, यह सब कार्य एकदेशीके होते है। ईश्वरको एकदेशी मानना याने उसका घनघोर अपमान करना है। इतनाही नही तो उसे आपने सच्चे स्वरूप से जाना ही नही यही सिद्ध होता है। स्वामी दयानंद का कहना है कि अवतारं जीवोका होता है, ईश्वर का नही। स्वामी दयानंदका यहभी कहना है कि मनुष्य उन्नति कर ऋषि पितर देवता बन सकता है, परंतु ईश्वर नही बन सकता। कोईभी जीवात्मा ईश्वर का कार्य नही कर सकता, इसी प्रकार ईश्वरभी जीवात्माका कार्य कर नही सकता ध्यान रहे ईश्वर सब कुछ करता है यह भ्रान्त विचार है।

स्वामी विवेकानंद की मान्यता है कि ईश्वरके अवतार होते है। वे गौतम बुध्द, ईसामसीह, मोहम्मद साहब इनको ईश्वरके अवतार मानते थे। मनुष्य मे कुछ दैवी गुण आ सकते है, वह विशेषज्ञ तथा महात्मा बन सकता है पर ईश्वर नही। स्वामी विवेकानंदकी मान्यता इस संबंधमे त्रुटिपूर्ण प्रतीत होती है। चूंकि उन्होने जीवात्मा और परमात्मा के स्वरूप को समझने की कोशीश ही नही की।

**भाषा ज्ञान :** स्वामी विवेकानंद इंग्लिश अच्छी तरह जानते थे, उनका विदेशोमे प्रचार भी इंग्लीश भाषा माध्यमसे हुवा है। परंतु स्वामी दयानंद अंग्रेजी नही जानते थे। वे जन्मना

गुजराती थे, गुजराती उनकी मातृभाषा थी परंतु उन्होने भारत की आर्य भाषा हिंदी का ही प्रयोग किया। हिंदी इस देशको आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद का इस देशकी हिंदी आर्य भाषा से कोई लगाव नही था, वे भूल गये कि मूलतः वे भारतीय है। औरभी एक बात है कि स्वामी दयानंद संस्कृत धाराप्रवाह बोलते थे, संस्कृतपर उनका प्रभुत्व था। मात्र स्वामी विवेकानंद को इस प्रकार संस्कृत नही आती थी। अंग्रेजी जाननेवाला श्रेष्ठ है या संस्कृत जाननेवाला, यह आपही विचार करें। संस्कृत न आनेसे स्वामी विवेकानंद अपनी संस्कृतिसे तनिक भटक गये, क्या यह अंग्रेजी का प्रभाव हो सकता है ? स्वामी दयानंद कभीभी विदेशोमे नही गये, परंतु स्वामी विवेकानंद ने मात्र भरपूर विदेश भ्रमण किया। विदेशोमे जानेवाले यदि उच्च होते, तो आद्य शंकराचार्य, कुमारील भट्टादि या अन्य ऋषिमुनि लोग जो कभी विदेशोमे गये नही उन्होने सहस्त्रगुना श्रेष्ठत्व प्राप्त किया इस बातसे कोई इन्कार नही कर सकता। भारत संसारका गुरू था सारे विदेशी इसकी चरण शरण मे आते थे : अतः विदेश प्रचार कोई अहमन्यता नही रखता। स्वामी दयानंद विदेशोमे नही गये किन्तु विदेशोयोंसे उनका संपर्क रहा है। मॅडम ब्लेव्हॅटस्की कर्नल अल्काट, व्हाइसराय, गव्हर्नर क्लेक्टर, पादरी इत्यादियोंसे उनका संपर्क हुवा किन्तु वैदिक संस्कृतिका एवं देशहितार्थही उन्होने परामर्श दिया, विदेशीयोकी उनके सामने कुछ नही चली। लॉर्ड नॉर्थ ब्रुकने प्रश्न किया क्या आप ईश्वरसे अंग्रेजी राज्य भारत मे सदा सर्वकाल रहे ऐसी प्रार्थना करोगे ? इस प्रश्न के उत्तर मे स्वामी दयानंद बोले मै तो विदेशी राज्य एक पलभी हमारे उपर न रहे ऐसा मानता हूं, इससे ज्वलंत एव जाज्वल्य राष्ट्र संस्कृति, धर्म का स्वाभिमान प्रकट होता है, इस प्रकार की बात स्वामी विवेकानंदमे ढूंढनेसे भी नही मिलेगी।

**धर्म की मान्यता और भ्रान्तियां** : स्वामी दयानंद सरस्वती महाराज की धर्म संबंधमे मान्यता है कि धर्म ईश्वरीय होता है जो सबके लिये समान होता है। कोई मनुष्य धर्म चला नही या निर्माण नही कर सकता अर्थात वर्तमान तथाकथित धर्म यह धर्म नही, मत, पंथ, संप्रदायादि है। धर्म ईश्वरीय होता है जैसे अग्निका धर्म जलाना, प्रकाश देना,उष्णता देना है, जलका धर्म उपरसे नीचेकी ओर बहना है, पत्थरका धर्म पानीमे डूबना है तो लकडका धर्म पानीमे तरंगना है, लोहेका धर्म चुंबक प्रति आकर्षित होना है, गायका धर्म घास खाना है, तो शेरका धम मांस खाना है, कौवेका धर्म क्रॉव क्रॉव कहना है तो कोयल का धर्म पंचम स्वरमे गाना है, पुरूष का धर्म स्त्री प्रति आकर्षित होना है तो स्त्रियोंका धर्म संतानप्रति आकर्षित होना है और मानवता दोनोका धर्म है अस्तु। कृपया बताइये किसी योगी, महात्मा, श्रेष्ठ वैज्ञानिक या किसी तपस्वीने यह धर्म उन उन वस्तु और पदार्थोको लगाये है। उत्तर होगा कदापि नही, ना भूतमे किसीने लगाये, ना वर्तमान में कोई लगा

सकता है ना भविष्य मे कोई लगा सकेगा। ऐसे ऋत तथा सत्य धर्म को स्वामी दयानंद मानते थे। धर्म की व्याख्यामे वें मानते थे कि यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिध्दि : स धर्मः। धारयति इति धर्म : । धर्मो विश्वस्य जगत : प्रतिष्ठ : । धारणात् धर्म मित्याहु, धर्मो धारयती प्रजा : । धृति क्षमा दमो अस्तेयं इत्यादि १० लक्षण । मनुष्य कृत धर्म, धर्म नही होते, वे तो विभिन्न मतमतांतर है, पंथ है, संप्रदाय होते है । धर्म सत्य एवं विज्ञानाधिष्ठित, वेद अविरूध्द तथा वेदानुकुल होता है। वेद विरूध्द धर्म (तथाकथित) धर्म नही, अधर्म है। श्रीमत भागवतमे भी कहा है कि-वेद प्रणहितो ही धर्मः तत् विपर्ययः ही अधर्मः । ऋषि मुनिजनोकी मान्यताओं से स्वामी दयानंद की बाते मेल खाती है इसलिये संसारमे एकही सत्य दार्शनिक वैज्ञानिक मौलिक एवं ईश्वर प्रणित वेदधर्म या वैदिक धर्महै।

स्वामी विवेकानंद की धर्म विषयक मान्यताये सबको खुश करनेकी रही है। कभी रामकी स्तुति की, कभी कृष्ण की, फिर कभी अनीश्वरवादी बुध्द को ईश्वर माना, उन्होने गौतम बुध्द को येशू खिस्त / ईसाके साथ जोड दिया। वे बुध्द और ईसा को ईश्वर अवतार मानते है । स्वामी विवेकानंद अपनी कल्पना से लिखते है - वही बुध्द ईसा हुये । बुध्द ने भविष्यवाणी की थी, मै पाचसौ वर्षोमे पुनः आउंगा, तो पाचसौ वषकि बाद ईसा आये। समस्त संसारको बुध्द और ईसाने बाट लिया है, वे दो विराट ज्योतियां थी । संसारमे जहां कहीभी किंचित ज्ञान है, लोग या तो बुध्द या ईसा के सामने सिर झुकाते है । पांचसौ वर्षोबाद मोहम्मद आये फिर पांचसौ वर्षोबाद प्राटेस्टंटकी लहर चली, मार्टिन लूथर आये। ईसा और बुध्द ईश्वर थे, दुसरे सब पैगंबर थे। बाईबिल, कुरान शरीफको भी वे ईश्वरीय पुस्तक मानते थे । परन्तु वेद प्रामाण्य कुछ सीमा तक ही मानते थे । वे कहते है -"मै वेदोका उतनाही अंश मानता हूं जितना युक्तिसंगत है, उनका यह भी कहना है कि वेदके अंश तो स्वविरोधी है Self contradictory - वदतो व्याघात है, वेद असिध्द व्यक्तियोके लिये है किन्तु सिध्दावस्थामे तो वेदोके परे जाना पडताहै, बहुतस ऐसे मंत्र है जो ईश्वर प्रस्तुत नही माने जा सकते कारण उनमे प्राणिमात्रको हानि पहुचानेका विधान है जैसे यज्ञ मे हिंसा-बलि इत्यादी"

स्वामी विवेकानंदकी मान्यता थी कि वेद संहिता भाग मे अनन्त स्वर्गका वर्णन है जैसे ईसाई, मुसलमानो का है। वे वेद संहिता को केवल इतिहास और भाषा शास्त्रकी दृष्टिसे देखते थे। वेद कर्मकाण्ड परक है परन्तु आरण्यके उपनिषदे ज्ञानकाण्ड परक होने से अधिक महत्वपूर्ण है। ऐसी विपरीत बाते कहनेवाले स्वामी विवेकानंदने ना कभी वेदाध्ययन किया था, ना कभी वेदोको जाना था। कोई अनभिज्ञ मनुष्यही ऐसी बात बिना देखे सोचे कह सकता है। महात्मा बुध्दने यज्ञ मे होनेवाली पशु हिंसा - जो वैदिक काल के अवनतिका

कारण थी - देखकर यज्ञोका विरोध किया, जिन वेदमंत्रोसे यज्ञ संपन्न होते थे उन वेदमंत्रोकाभी विरोध किया और जिस वेद को ईश्वरीय वाणी कहते है, तो महात्मा बुध्द ने ऐसे ईश्वर को भी माननेसे इन्कार कर दिया। यह सब महात्मा बुध्दने अवश्य किया परन्तु वेद मंत्रोकी तह मे जाकर, निरूक्त निघण्टु अष्टाध्यायी महाभाष्य इ. व्याकरण ग्रंथो के आधारपर उन्होने वेदोको जाननेका कतई प्रयास नही किया, यदि करते तो उस समय समाजको वे खाई से बाहर निकालनेमे समर्थ होते और वेदोकी सच्ची प्रतिष्ठापना करते, परन्तु दुर्भाग्य है की इस दिशा मे कार्य हुवा नही।

ईसा पर महात्मा बुध्द, जरदुस्ती, और यहुदीयोकी मान्यताओका प्रभाव था। स्वामी विवेकानंदका हिन्दुत्व ईसाईयत का पोषक था, जैसे कि उनके विचारोसे जाना जाता है। ध्यान रहे कि स्वामी विवेकानंदके विजार भारतीयोको ईसाई होनेसे रोक नही सके, वे ईसा को ईश्वर ही मानते थे। भारतवासी ईसाई हो जाये या मुसलमानभी हो जाये, तो उन्हे कोई आपत्ति नही थी। छुआछूत की पराकाष्ठा और हिन्दुओकी सहानुभूति न होनेसे मद्रास प्रांत के हजारो अस्पृश्य ख्रिश्चन बने, परन्तु स्वामी विवेकानंदने उनकी कोई सुधी न ली। स्वामी विवेकानंदने वेदान्त का प्रचार अपने प्रभावशाली व्याख्यानोके माध्यमसे किया यह सूर्यप्रकाश जैंसा स्पष्ट है। फिर प्रश्न उठता है कि क्या वेदान्त पशुगण और मनुष्यगण को जीवात्माकी दृष्टीसे भिन्न भिन्न मानता है ? वेदान्त तो इस बात को नही मानता और यहीभी नही मानता कि ईश्वरने पशुओंको और जलचरोको मनुष्य के भोज्य रूपसे बनाया है। जो वेदान्त इस प्रकारकी शिक्षा देता है, उसी वेदान्त के प्रचारक स्वामी विवेकानंद कहते है कि मै मांस खाता हूं, यह मेरी दुर्बलता है, पशु हमारे भाई है, शारीरिक श्रम करनेवालोके लिये मांसाहार क्या अनिवार्य है, क्या यह धर्म प्रचार का आध्यात्म है ? स्वामी विवेकानंद कहते है - खूब खाओ भाई इससे जो पाप होगा सो मेरा।" स्वामी विवेकानंद कहते थे कि मनुके धर्म मे लिखा है मछली और मांस खाना धर्म है। देख लीजिये एक गीता उपनिषद और वेदान्त जाननेवाले और उसका प्रचार करनेवाले की बात। ऐसे स्वामी विवेकानंद तो नही पर अविवेकानंद ही ज्ञात होते है। और देखिये - आद्य शंकराचार्यने बौध्दधर्म को भारतसे निकाल दिया और आस्तिक धर्म की स्थापना की। परन्तु स्वामी विवेकानंदने महात्मा बुध्द को माना है और बुध्द धर्म बाहर करनेवाले शंकराचार्यकोभी माना है, यह किस प्रकारहो सकता है ? इससे यह बात सिध्द होती है की स्वामी विवेकानंदके सिध्दांत आचार विचार व्यवहारोमे निश्चितता नही थी, स्थिर बुध्दि नही थी, वे ध्रुव निश्चयवाले नही थे ना उनकी सच्चे धर्म के प्रति अटूट श्रध्दा थी। इससे स्पष्ट होता है कि गंगा गये गंगादास, जमना गये जमनादास ! ऐसो की मान्यता कौन करें ?

वेद केवल कर्मकाण्ड की पुस्तक नही है जैंसा कि स्वामी विवेकानंद का विचार है। चार वेदो मे बहुतायतसे ज्ञानकाण्ड, कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड और विज्ञानकाण्ड विद्यमान है, अतः केवल कर्मकाण्डकी बात करना माने वेदोसे अनभिज्ञताकाही परिचय देना है। मनुस्मृतीमे मछली मांस मद्य इ: का निषेध किया है, तो वे धर्म तो नही पर निषिध्दधर्म हो सकते है। वेदोमे पशु हिंसा, यज्ञ मे बलि, मांसाहार इत्यादिके लिये एकभी मंत्र नही है, यह हम दावे के साथ कहते है और यदि कोई बतावे तो मेरा विनम्र आव्हान स्विकार करें। स्वामी विवेकानंद कहते है वैदिक कालमे ब्राह्मण गोमांस खाया करते थे। स्वामी स्वयंभी मांस खाते थे और उसका दृढ समर्थनही करते थे. मांस खानेवाला इस प्रकार भारत का एक सन्यासी फिरभी योगी कहलाये जहां योगियोके लक्षणमे सर्वप्रथम प्राणिमात्रके अहिंसाका प्रावधान है तब यह तो महद आश्चर्य है। उनके गुरू रामकृष्ण परमहंस इन्होने कुत्ता बनकर गाय का मांस खाया है।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने गोकरूणानिधी पुस्तिका लिखी, स्वाक्षरी अभियान चलाया सर्व प्रथम रिवाडीमे गोरक्षण पांजरपोल संस्था खोली एवं गौवंश वध के विरोधमे प्रबल विचार दिये। यह थी वैदिक परंपरा किन्तु स्वामी विवेकानंदजी पाश्चात्योंके अन्धानुयायी होनेसे उन्होने इस संबंधमे कुछ भी कार्य नही किया, ना परंपरा का पालन किया, ना स्वामी सन्यासीयो जैसा आचरण किया।

**सामाजिक सुधार क्षेत्र** : अष्टवर्षा भवेत गौरी, नववर्षात रोहिणी। दशवर्षाभवेत् कन्या तद् पश्चात् रजस्वला। इस प्रकारकी मान्यता इस देश के समाजोमे विद्यमान थी। यह भी कहा जाता था कि रजस्वला कन्या के दर्शनसे मातापिता नरकगामी होते है। मतबल यह है कि बाल विवाह प्रथा समाजोमे प्रचलित थी। बाल विवाहोसे और लिखा है कि मनुष्य शरीर रचना ऐसी है जिसमे भोज्य, मांस के अतिरिक्त कुछ भी नही। धन्य हो स्वामी विवेकानंद धन्य हो आप भी और आपके गुरू भी! मांसाहार के इस जघन्य अपराधसे आप किस प्रकार बचोंगे ? जिस महात्मा बुध्द ने पशुबलि का घोर विरोध किया, अहिंसा की प्रतिस्थापनाका आजीवन प्रयत्न किया, उसी महात्मा बुध्द के बौध्दधर्मी राष्ट्रोमे कीडे मकोडे मेंडकादि प्रतिदिन खाते है, जैंसा यह विपरीत कार्य है ठीक उसी प्रकार स्वामी विवेकानंदका विचार और आचार विपरीत है। ऐसे स्वामी की कौन मान्यता करे ? विश्व हिन्दु परिषदवाले आद्य शंकराचार्यको मानते है कि उन्होने बौध्द धर्म भारतसे निकाल दिया और भारत को बचाया, परन्तु इससे विपरीत यही विश्व हिन्दु परिषद वाले ब्रम्हदेशमे (बर्मा) सनातन धर्म स्वयंसेवकसंघ की स्थापना करके महात्मा बुध्दकी मूर्तियोके सामने नतमस्तक होते है, क्या कहे। अजी हिंदुओके साथ विडम्बना का कोई पारावार नही रहा। अतिथी

सत्कार के लिये बकरे और बैलों की हत्या का विधान वेदमें है यह स्वामी विवेकानंद ने लिखकर महान अपराध किया है और सारे शाकाहारी जगतपर आघात ही किया है। उनके इस भ्रम की क्या समीक्षा करें ? विवेकानंद पाश्चात्यों के अंधानुयायी थे बस यही एक सत्य है। वेद में इतिहास नही है वे मानव सृष्टि के साथ ही इस मानव के लिये संविधान स्वरूप चार परमपवित्र मुक्तात्मा ऋषि अग्नि वायु आदित्य और अंगिरा इनके अंतः करणमें परमपिता परमात्मा की प्रेरणा से संसार के मानवमात्र के लिये दिया गया शुध्द पूर्ण वैज्ञानिक नित्य ज्ञान है। जब प्रथम मानव जाति इस धरातल पर आयी तब उसमे इतिहास किस प्रकार होगा ? यद्यपि वेदमे गंगा, यमुना, सरस्वती शरयू, गोमती, दशव्दती इत्यादि नदीयोंके नाम आये है। तब वेद इतिहास भूगोल की पुस्तक कहलाता है ऐसा कुछ तथाकथित विद्वान शंका करते है। परन्तु उन्होने इन नदीयोंको नामोके अर्थ ही जाने नही, यदि जानते तो इसप्रकार वेद पर आक्षेप न करते। गंगा का अर्थ है प्रबल वाहिनी, यमुना - विस्तीर्ण वाहिनी, सरस्वती - पूर्णजल युक्त, शरयू - हंवादार, गोमती-दुग्धसमानजलवाली, दशद्धती-दसका समूह वाली नदी इत्यादि ध्यान रहे Ved is an eternal constitution of creator यदि वेद मे मनुष्य मात्र के लिये ज्ञान संविधान न हो तो, मनुष्य कैसे सीख सकता है? मा पेटसें आजभी कोई सीखकर आता नही, पतिपत्नी डॉक्टर पीएचडी होकर भी संतान किमान मॅट्रीक पढा या प्राथमिक ४-५ कक्षा का पढा हुवा पैदा नही होता। वेद मे आये कुछ नामोसे इसीप्रकार जाना जावे, विस्तार भय से अन्य बाते यहां प्रस्तुत नही करते है।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने गोकरूणानिधी पुस्तिका लिखी, स्वाक्षरी अभियान चलाया सर्व प्रथम रिवाडीमे गोरक्षण पांजरपोल संस्था खोली एवं गौवंश वध के विरोधमे प्रबल विचार दिये। यह भी वैदिक परंपरा, किन्तु स्वामी विवेकानंदजी पाश्चात्योंके अन्धानुयायी होनेसे उन्होने इस संबंधमे कुछ भी कार्य नही किया, ना परंपरा का पालन किया, ना स्वामी सन्यासीयो जैसा आचरण किया।

**सामाजिक सुधार क्षेत्र :** अष्टवर्षा भवेत गौरी, नववर्षा च गोहिणी। दशवर्षाभवेत् कन्या तद् पश्चात् रजस्वला। इस प्रकारकी मान्यता इस देश के समाजोमे विद्यमान थी। यह भी कहा जाता था कि रजस्वला कन्या के दर्शनसे मातापिता नरकगामी होते है। मतलब यह है कि बाल विवाह प्रथा समाजोमे प्रचलित थी। बाल विवाहोसे विधवाये भी अधिक संख्यामे होती थी। और विधवा विवाह शास्त्रसंमत माना नही जाता था। हिन्दु जाति के इस दुर्बल मनोभावना का विधर्मीयोने बहुत लाभ उठाया। यह भी जाना गया कि प्रतिवर्ष भारत के हिन्दुओंकी ३५००० विधवायें अन्योके घर आबाद करती थी। इससे

हिन्दुओंकी संख्या घटती थी और विधर्मीयोकी संख्यामे बाढ आती रहती थी। यहभी सांख्यकिय माहिती उपलब्ध है कि सन ९०० से १९०० पर्यंत १००० वर्षो मे १० करोड हिन्दु विधर्मीयोंकी चुंगलमे फंसे अर्थात संख्या घटती जाती रही। वास्तविक शास्त्र यह है कि बाल विवाह नही होने चाहिये और विधवा विवाह या पुनर्विवाहोंकी मान्यता शास्त्रो मे है। इस बातकी ओर स्वामी दयानंद ने समाज का ध्यान आकर्षित किया और इस कुप्रथाओंका भण्डाफोड कर बाल विवाह बंद कराये, विधवा विवाह प्रारंभ किये। सती प्रथाभी हिन्दु समाजका कर्करोग थी। इन सभीके सुधारोके लिये स्वामी विवेकानंद चुप्पी साथे थे, इतना नही तो वे इनमे सुधारोंके लिये केवल मगजपच्ची का काम है ऐसा मानते थे। क्या वेदान्त या प्रस्थानत्रयीमे इन कुरीतीयोसे समाजको बचानेका कार्य नही करना, ऐसा लिखा है ? यदि नही तो हिन्दुत्वका डंका बजानेवाले और विदेशोमे हिन्दु धर्म की महत्तता वतानेवाले इस स्वामी विवेकानंदने इस ओर क्यों पीठ फेरली ?

जन्मना जातवाद, अस्पृश्योध्दार, छूआछूत, वेदाध्ययनका आरक्षण इत्यादि बातो की तरफभी स्वामी विवेकानंदने कोई ध्यान नही दिया, परिणाम स्वरूप यह हिन्दु भाई, बहने धडाधड विधर्मी बनते गये किन्तु किसी प्रकार परावर्तनका या शुध्दिका चक्र स्वामी विवेकानंद ने नही चलाया। अजी, हिंदुओंके क्षतिका उन्हे क्या लेना देना था ? बडा अचरज तो यह है कि आजकी तथाकथित हिन्दु हित रक्षिणी सभायें या संघ, परिषदे स्वामी विवेकानंदका उदो उदो, कर ढिण्ढोरा पीटती है, वे इसप्रकार कहते है कि जैसे स्वामी विवेकानंद कोई मसीहा थे, उनके चित्र, फोटो, पुतले, नामपट्ट प्रचार प्रसार, इसप्रकार, किया जा रहा है कि उन जैसा हिन्दु रक्षक अन्य हुवा ही नही, मुझे तो शंका आती है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की ज्येष्ठता, श्रेष्ठता इनको मनोमन चूभ रही हो। धन्य हो वे गुरू गोविंदसिंह जो ललकारके घोषणा करते थे कि सवा लाखसे एक लढाऊ। चिडियासे मै बाज मराऊ, तभी गोविंदसिंह नाम कहाउं। इन सुतन के कारणे वार दिये सुतचार। चार गये तो क्या हुवा जीवित कई हजार॥ You will understand Vedanthism better with your biceps strong इस प्रकार कुमारो को समझानेवाले स्वामी विवेकानंद सामाजिक सुधारमे कोई ठोस या जोश भरा काम नही कर सके इसका दुख होता है।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने गले सडे हिन्दुजातिमे मुर्दा कौममे-जान डाल दी, शुध्दिका चक्र चलाया, संसारका एक धर्म है-मनुर्भव बताया, मूर्तिपूजा की धीमकसे जातिको सचेत किया किन्तु ईश्वर की मूर्ति बनानेवाले उसके नामपर प्राण प्रतिष्ठाका ढोंग एवं पाखंड रचनेवाले हिन्दुजातिके तथाकथित पंडित लोग-ईश्वरके निर्माता-बाप बन गये है। यह वही मूर्तिपूजा है जिसने इस जातिके साथ समस्त राष्टको हजार वर्ष की गुलामगिरी के

पराधीनतामे दास बनाकर रखा। भगवानने आपको बनाया है, यह भूल गये और मनुष्य ही भगवानको बनाता जा रहा है। इससे घोर अंधकार अज्ञान अविद्या और क्या होंगी ? किन्तु काली माता का समर्थन कर, रामकृष्ण परमहंसकी मूर्तिया स्थापित कर स्वामी विवेकानंदने समाजका पाखंड दूर करने की बजाय उस पाखंडको उभारा है, उसे सींचा है, समर्थन एवं पुष्टि दी है। क्या कोईभी वेदान्ती ईश्वरकी मूर्ति मनुष्य बना सकता है यह बात सिध्द कर सकता है ? यदि हो, तो किसीभी आर्य विचारधाराके पंडित विद्वानसे शास्त्रार्थ कर लेवे या मै भी इसका आव्हान प्रकट करता हूं। India is a land of extremes कहने वाले स्वामी विवेकानंदने पाखंडको बढावा देनेमे Extremist की भूमिका- परमोच्च शिखर प्राप्त किया है।

**संस्था स्थापना :** स्वामी दयानंद ने सन १८७५ मे माणिकचंद की कोठीपर काकडवाडी क्षेत्रके गिरगांव विभागसे मुंबई मे. संसारका प्रथम आर्य समाज चैत्र शुध्द प्रतिपदा नववर्षारंभ के शुभ मुहुर्तपर स्थापित किया, जिसके दस नियम और उद्देश्य, विश्वमानवके शांति एवं उन्नतिके है, इसमे किसी प्रकार जातीयता, पंथाईपनकी बदबू, सांप्रदायिकताकी बीमारी नही है। संसार के किसीभी जाति तथाकथित धर्म, मत, पंथ, संप्रदाय के छोटेबडे, काले गोरे, सभी स्त्री पुरूष इसमे प्रवेश कर सकते है। स्वामीजी की उत्तराधिकारी सभा का नाम स्वामी दयानंदने हिंदु हित सभा नही रखा, हिंदु उपकार सभाभी नही रखा, अरे ! आर्य समाज उपकार सभाभी नही रखा, वे गुजरात प्रांतके थे परन्तु गुजरात सभा या राजस्थान सभा या भारतीय उपकार सभा भी नही रखा परंतु नाम रखा **परोपकारिणी सभा।** अहाहा! अजी दयानंदके मनकी गहराई और दिलकी चौडाई एवं सुविचारोंकी थाह तो देखो वह दिव्य देवता दयानंद विश्वव्यापक था। विदेशोंमे चक्कर काटनेसे मनुष्य विश्वव्यापक नही बन सकता। मुझे स्मरण आता है, मारीशस जो स्वयंको छोटा भारत कहलानेमे गर्व रखता है वह तो आर्य समाज का गढ है वहां फ्रेंच, मुस्लिम, हिंदु तीन कौमे होते हुये भी आर्य समाजी बॅरिस्टर दिवंगत शिवसागर रामगुलाम जो वहां के राष्ट्रपती थे उनका स्वागत संसारकी सर्वोच्च सभा युनो संयुक्त राष्ट्र संघटना व्दारा संसारका प्रथम श्रेष्ठ नागरिक की उपाधिसे किया गया है, यह आर्य समाजके लिये भूषण है। अस्तु।

अब स्वामी विवेकानंद को तोलो। उन्होनेभी सन १८९६ मे न्यूयार्कमें वेदान्त समिती की स्थापना की। इस समिती की शाखाये डेट्राइट, बोस्टन आदि नगरोमेभी स्थापित की गयी। यहां तक तो ठीक है परंतु उनके सिध्दांत, तत्व एवं तत्वज्ञान, का उनकी मान्यतायें विदेशोमे या भारतमें किसी प्रकार पनप न सकी। वेदान्त के तत्वज्ञान का अन्त ही स्वयं स्वामी विवेकानंदने अपने खानपान आचार एवं विचारोसे किया था, इसमे वेदान्त या

प्रस्थानत्रयी को दोष देने के बजाय स्वयं स्वामीजी ही दोषी पाये जाते है।

**सर्वधर्म समन्वय :** स्वामी दयानंद और स्वामी विवेकानंद दोनो भी समन्वय चाहते थे। स्वामी विवेकानंदकी मान्यता थी कि सर्व धर्म अपनी अपनी जगह बने रहे, परंतु सारे मिलकर रहे। वे तो विदेशोमे खुले आम कहते थे कि तुम्हे जीना हो तो ईसा को अपनावो। वे यहभी कहते रहे कि इस्लाम के बिना हिंदुधर्म अपूर्ण है। उन्होने उनके एक मित्र जो नैनितालमें रहते थे उनको इसीप्रकार पत्रमे लिख भेजा था। एक जगह वे कहते है-मै ऐसा भारत बनाना चाहता हूं जिसका मस्तिष्क वेदान्त हो और शरीर इस्लाम का। उनका मत था कि हिंदुधर्म अधूरा धर्म है. भारतके लिये हिन्दुत्व और इस्लाम का मिश्रण अनिवार्य है। स्याद इस विचारके बलबूते पर ही कलकत्ता उच्च न्यायालयमे रामकृष्ण मिशन की ओरसे लिखित घोषणा की गयी थी कि हम हिंदु नही है। वैदिक मौलिक मूल्य नही जाननेसेही स्वामी विवेकानंद इस तरह भटक गये थे।

स्वामी दयानंदने सन १८७७ में समस्त धर्मो के धर्मगुरू, विद्वान इनकी एक सभा दिल्लीमे दिल्ली दरबार के समय बुलायी थी। सबने अपने अपने धर्मकि सिध्दान्त, तत्व एवं मतोकी दुहाई दी, तब तो समन्वय कैसे बने ? स्वामी दयानंद का कहना था कि अपन सब लोग सारे शाश्वत श्रेष्ठ मतोकी सूचि तयार कर लेवे, और एक आचार संहिता बनालेवे और समस्त धर्मानुयायीयोसे उसका पालन करवाये ताकि सारे विश्वमानवोका एकही मानवता धर्म हो। परंतु खेद है कि स्वामी दयानंदकी बात मानी नही गयी, कोईभी अपना अपना मत छोडने तयार न हुवा जैसेके तैसे बने रहे। यदि उससमय स्वामी दयानंदकी मानव कल्याण की और दूरदर्शिताकी बात मानते, तो संसारके ९९ प्रतिशत झगडे तंटे खून खराबा इत्यादिसे सारा संसार बच जाता। वही सच्चा सर्व धर्म समन्वय होता। महात्मा गांधीकी सर्वधर्म समभाव की गलत नीति अव्यवहार्य होनेसे फेल हो गयी और धर्म के नामपर १५ लक्ष लोगोकी गर्दने काटी गयी, अरबो खरबोका नुकसान हुवा और व्दिराष्ट्रवाद पनप गया। उदाहरण के तौर पर कहता हूं कि हलुवा/मोहन भोग/सिरा बनाना है, इसके लिये रवा या सूजी खांड शक्कर, घी साहित्य चाहिये। सबको मिलानेसे (यथायोग्य रीतीसे) हलुवा तयार होगा। सबको अपना अपना अस्तित्व छोडना पडेगा। परंतु रवा कहता मै रवा ही रहूंगा, शक्कर कहती है मै घुलकर नही स्वयं शक्कर रहूंगी, घी कहता है मै बिना पिघले घी ही बना रहूंगा, तब विचार करें कि क्या हलुवा बन सकेगा। सबको अपना अपना अस्तित्व मिटाकरही एक श्रेष्ठ मिष्टान्न तयार होता, परंतु ऐसा न होनेसे-दयानंदकी समन्वय की धारणाको नही माननेसे संसारकी क्षति ही हुई है। इस प्रकारकी विचार भावना और वृत्ति विवेकानंदमे ढूंढनेसे भी नही मिलेगी।

महात्मा बुध्द ने हमारे देश का नाश किया, क्षात्रतेज नष्ट हुवा, आक्रमण-कारीयोंका प्रतिकार किसीप्रकार वे कर न सके इसकारण देश इसहालतमे पहंचकर पराधीनता की श्रृंखलामें बंध गया। ईसाने भी (ग्रीस) युनान का और रोम का नाश किया। स्वामी विवेकानंद कहते थे कि ईश्वर ने ईसा होकर जन्म लिया, इतना ही नही तो वे कहते थे कि ईसा, मोहम्मद और चंगेजखां इनकी तलवारे एकता के लिये उठाई गयी थी। अरे कोई इतिहासका अज्ञानीही ऐसी मान्यता रख सकता है।

**स्वदेशी स्वराज्य :** "आमार सोनार बांगला" यह घोषणा समस्त बंगालके लिये बहुत कालसे प्रचलित है। बंगालने चैतन्य महाप्रभु जैसे संत महात्मा को, अरविन्दघोष जैसे योगीयोंको रविन्द्रनाथ ठाकूर जैसे श्रेष्ठ प्रतिभाशाली कवियोंको, जगदीशचन्द्र बोस जैसे वैज्ञानिकोको, अनेकानेक साहित्यिकोंको नाटककारोको तथा क्रान्तीकारीयोंको जन्म दिया है। वंदेमातरम् का नारा बंगालने दिया है। बंगालमे क्रांतीकारीयोंकी कतार की कतार थी इसीलिये बंगाली बाबूओंकी एकजर्मन महानुभाव के कथनानुसार कहते है - The Bengalis are the Frenchmen of India खुदीराम बोस, कन्हैयालाल दत्त, प्रफुल्ल चाकी सत्येन्द्र बोस रास बिहारी बोस, सुरेन्द्रनाथ बॅनर्जी जैसे तरूण युवकोने अपने प्राण इस मातृभूमिके आजादीके लिये निछावर कर दिये। क्रांतीकारीयोंके मुकुटमणि नेताजी सुभाषचंद्र बोस को कौन भारतीय भुला सकता है। ऐसे स्वर्णमयी भूमि मे जिन स्वामी विवेकानंद ने जन्म पाया और युवा, त्यागी होते हुये भी उन्होने स्वदेशी या स्वराज्य के लिये कुछ भी ठोस कार्य नही किया, ऐसा लिखनेमे अतिशयोक्ति नही होगी। १८५७ के आजादी के प्रथम संग्राम मे साधुसंतोने अपनी ईश्वरभक्ति के साथ देशभक्ति का भी परिचय दिया था। अज्ञात इतिहास के पन्नोमे स्वामी दयानंद का १८५७ से १८६० पर्यंतका अज्ञात जीवन उन्होने राष्ट्रीय स्वांतत्र्य के लिये बिताया था। श्यामजी कृष्ण वर्मा को इंग्लड भेजकर पार्लियामेंट एवं राजधानी लंदनमे भारतीय स्वातंत्र्य का बिगुल उन्होने बजाया था। स्वामी दयानंद ने आर्याभिविनय, सत्यार्थप्रकाश पुस्तकोमे स्वदेशी, स्वराज्य इत्यादि संबंधी अपनी भूमिका साफ निर्भीड होकर प्रस्तुत की। वेदोमे स्वातंत्र्य शब्द नही परंतु अधीन शब्द अवश्य है, स्वाधीनता अच्छी है, पराधिनता मृत्यु है। No. Nation is good enough to govern another nation. यह स्वामी दयानंद की धारणा बडी मजबूत थी। और यहां यह उद्धृत करना मै मेरा कर्तव्य समझता हूं कि आजादी के लडाई मे ८0% दयानंद के दिवाने आर्य समाजी ही थे। यह है दयानंद के शिष्य। स्वामी दयानंद के लिये कॉंग्रेस इतिहास लिखनेवाले, म. प्र. के तत्कालिन राज्यपाल तथा कॉंग्रेसाध्यक्ष डॉ: पट्टाभिसीतारामय्या इतिहास मे सर्व प्रथम लिखते है कि If Mahatma Gandhi is called father of India

Swami Dayanand Saraswati will be the Grandfather of India. देश, धर्म सामाजिक सुधार इत्यादि के लिये स्वामी दयानंद के शिष्यो ने २४ लडाइयां लढी और ७६ बलिदान दिये। यह बलिदान कितने वेदान्ती कर पाये, यह विचारणीय प्रश्न है।

कोई सज्जन आपत्ति कर सकते है कि स्वदेशी, स्वराज्य यह विषय वेदान्तीयो का नही। बात तो ठीक लगती है। परंतु वेदान्तका प्रचार प्रसार यह तो उनका कार्य है वा नही ? मानना पडेगा कि प्रचार कार्य तो है और स्वामी विवेकानंदने किया भी है। तब बताईये स्वामी विवेकानंदने अपने मत प्रतिष्ठापनमे कितने शास्त्रार्थ किये ? उत्तर होगा एकभी नही। स्वामी विवेकानंद का प्रचार क्षेत्र पाश्चिमात्य देश रहे है। जो आध्यात्मकी ए बी सी डी भी नही जानते थे। उनके सामने स्वामी विवेकानंदने बडा भारी नाम कमाया। यह तो ऐसीही बात हुई कि मरूभूमिमे जहां एकभी वृक्ष पनपता नही, वहां एरन्ड के पौदे को ही बडा उंचा वृक्ष मानते है। तब वहां यदि श्रेष्ठताभी पाया तो कोई बडा कमाल नही किया। स्वामी दयानंद ने वैदिक आर्य मत प्रतिष्ठापनाके लिये भारतमे जगह जगह उच्च कोटीके विद्वानोसे शास्त्रार्थ कर वेद विरोधीयोके छक्के छुडा दिये। ज्ञान एवं विद्या की नगरी काशीमें सन १८६९ में, क्या वेद मे (ईश्वर) मूर्ति पुजा है ? इस विषय पर काशी नरेशकी उपस्थिती मे १८ प्रकांड पंडितोसे तथा उद्‌भट विद्वानोसे स्वामी दयानंद अकेले ने टक्कर दी, तब एक भी माई का लाल वेदसे मूर्तिपूजा सिध्द नही कर सका। क्या इस प्रकारकी वेद जानकारी के साथ विद्वत्ता स्वामी विवेकानंद मे प्रतीत होती है? आजादी के लडाई में क्रांतीकारीयोको सहयोग देने के बजाय स्वामी विवेकानंद ने मा बाप अंग्रेज सरकार को प्रसन्न करनेके लिये रामकृष्ण मिशन को आंदोलन मे भाग लेनेसे मना किया था। यह तो बडी विचित्र खेदजनक बात रही है।

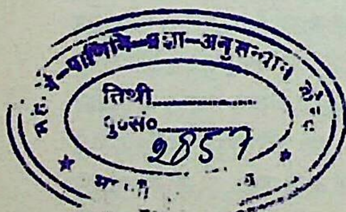
( **वेदो का भाष्य** - योगिक अर्थोका साथ करना कोई मामुली बात नही। सायणाचार्य, महिधर, मध्वाचार्य, निम्बाकाचार्य, वल्लभाचार्य इत्यादि आचार्योने किये वेद भाष्य पढकर ही स्वामी विवेकानंद को वेदोसंबंधी भ्रांतिया हुई थी। परंतु उन्होने सत्य जाननेका प्रयास नही किया। उदाहरणार्थ- यजुर्वेदके १६ वे अध्यायमे मंत्रांश आता है। श्वभ्य : नमः इसका अर्थ महिधरादिने किया कुत्तोको नमस्ते। फिर एक मंत्रांश है तस्कराणां पते : नम : अर्थात चोरोके सरदार को नमस्ते। ऐसे अर्थोको पढने सेही वेदो की महत्तता मिटियामेट हो गयी। परंतु स्वामी दयानंद की सही विशेषता है कि उन्होने निरुक्त निघण्टु के आधार पर नमः इति अन्नम् अर्थात कुत्तोको रोटी दो यह अर्थ किया, नमः इति दण्डम् चोरोके सरदार को दण्ड दो यह अर्थ किया। यदि इसी प्रकार सारे वेदोको जाना जाता, तो जो मॅक्समूलर वेदोको गडरीयों के गीत कहता था वही मॅक्समूलर स्वामी दयानंद के भाष्य प्रभावसे वेदोकी

प्रशंसा करने लगा। क्या स्वामी विवेकानंद के कार्य कुशलतामे ऐसी बात है ?।I) स्वामी विवेकानंद मूर्तिपूजा मठ स्थापना अवतारवाद मांसाहार इत्यादिसे स्वयं को मुक्त न कर सके। III) स्वामी विवेकानंद के विचार भारतीयोंको ईसाई मुसलमान बननेसे रोक नही सके। IV) यदि विवेकानंद की विचारधारा रही तो भारतीयोंको ईसाई हो जाना बुरा नही माना जायगा बल्कि श्रेयस्कर होगा। इसको वे रोक नही सके। V) स्वामी विवेकानंद जन्मना जातिवाद, छूआछूत अस्पृश्यतावाद, स्वार्थी ढोंगी और भोगी महन्त पुजारी कलंक, गुरूडम, जन्मपत्री फलित ज्योतिष, गंगासागर तीर्थ का पाखंड, इत्यादि यह समाज कलंक मिटानेमे कार्यक्षम कार्यतत्पर नही थे परन्तु वे स्वयं उसके शिकार बनते रहे।

केवल स्वामी विवेकानंद की डफली बजानेवालो। मै स्वामी विवेकानंद स्थापित बेलूर मठ की रामकृष्ण मिशन की संस्था मे सन १९५९-६० मे सतत पाच महिने रहा हूं। और वहां की गतिविधीयोंको अच्छी तरह देखा हूं। मेरा उद्देश्य किसीकी किसीप्रकार भावना को चोट पहुंचाना नही है। किन्तु सत्यान्वेषण कर सत्य जानना, सत्य मानना और सत्याचरण करना यही अपेक्षित है। आप स्वयं निर्णय करेंगे। इति शम्।

**खामगांव** **श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य, वानप्रस्थ**

**चैत्र शुध्द प्रतिपदा २०५४**
**आर्य समाज स्थापना दिवस**



यज्ञ विज्ञान जाननेसे और आचरण करनेसे त्याग भौतिक, मानसिक, सामाजिक एवं आत्मिक उन्नति, तप, और साधनामें बढीया सहायता होती है। प्राणिमात्रके कल्याण की कामनासे यज्ञ परिपूर्ण है। दुर्भाग्य है कि स्वामी विवेकानंद का किसी प्रकार प्रयास वैदिक संस्कृतिके इस महत्त्वपूर्ण दिशामे दृष्ट्री गोचर नही होता। वेदाध्ययनसे वे शून्य थे। वेदान्ती वैष्णव कहलाते है परन्तु वैष्णव धर्म/आचार निभाने मे भी वे स्वयं इससे कोसो दूर थे। पंचमहायज्ञादि दैनिक प्रगति योजना, आश्रम पध्दतिसे शतवर्षीय योजना, यागुणकर्मस्वभावानुसार सामाजिक वर्ण व्यवस्था इत्यादि आचारो की ओर उनका ध्यान रहा नही। भलाही प्रस्थानत्रयी मे वे गीता को माने पर यज्ञ, वर्णव्यवस्था, ईश्वर का निजनाम ओ३म् इत्यादि के मूलभूत प्रचार प्रसारादिमे उनकी रूचि नही के बराबर थी। गुरूडमसे वे स्वयंको दूर नही रख सके। वे बार बार हिंदु नामसे हिन्दु धर्म की दुहाई देते रहे किन्तु क्या कभी किसीने विचार किया कि हिन्दु नामक कोई धर्म संसारमे विद्यमान है?

पातंजल अष्टांग योग साधना किंवा गायत्री का जप जाप इसके लिये भी उनका प्रचार प्रसार उचित मात्रामे नही था। केवल राजयोग पर व्याख्यान से काम नही चलेगा। उपरी बातों की ओर यदि स्वामी विवेकानंद ध्यान देते तो उनका कीर्ति एवं यश ध्वज और उंचा लहराता।

**श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य**, वानप्रस्थ

# स्वामी विवेकानंद उवाच-कुछ उध्दरण-अंतरंग

१) वैदिक युगमें प्रतिमापूजन का अस्तित्व नही था कारण उस समय धारणा थी कि ईश्वर सर्वत्र विराजमान है। परंतु महात्मा बुध्द के प्रचार के कारण हम जगत स्त्रष्टा ईश्वर को खो बैठे, लोगोने बुध्द की मूर्ति गढ ली और पूजा प्रारंभ की। (देववाणी पृ. ७५)

२) मूर्तिपूजा हिन्दुधर्म का आवश्यक अंग नही है। (हिन्दुधर्म२३)

3) God in the picture is right but picture as God is wrong (147)

४) अमरनाथ की गुफामे मूर्ति के दर्शन कर कहा - मुर्ति साक्षात भगवान है। The image was the Lord himself (Bio. 270-71)

५) प्रतिमायेंभी भगवान की विशेष गुणवाचक मूर्तियां है। (विवेकानंद चरित पृ. १४६)

६) पत्रावली भाग १,पृ.१३८-श्री रामकृष्ण ब्रह्मा विष्णु तथा शिव इ. पौराणिक देवताओंसेभी बढकर साक्षात नारायण है।

७) बुध्द ने हमारा सर्वनाश किया और ईशाने ग्रीस और रोम का सर्व नाश किया। (प्राच्य और पाश्चात्य पृ.१५)

८) बुध्ददेवने आकर साधारण लोगोंमे वेदान्त का प्रचार कर भारत की रक्षा की (ज्ञानयोग-पृ.१५७)

9) Belive no book, the Vedas are all humbug.Buddha was the first man to give to the world a complete system of morality. (VII-40-41)

१०) ईश्वर करें जगत कभीभी एक धर्मावलम्बी न हो। (भारत मे विवेकानंद पृ. ३५८)

11) "I Say, Eat large quantities of Fish & Meat." (विवेकानंद के संग - पृ. २६७)